ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-3*April- 2018
Innovation The Research Concept

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना
व्यक्तित्व, विचारधारा एवं रचना दृष्टि

सुमन लता वर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
बाबूराम मोहन लाल
महाविद्यालय, बिधूना,
औरैया, उत्तर प्रदेश

सारांश

सम्वेदना का भाव है मनुष्य के अन्दर उत्पन्न होने वाले विभिन्न प्रकार के भाव चाहे व सुख–दुख, राग द्वेष, करुणा शोक, हर्ष–विलास आदि सभी प्रकार के भाव मानवीय संवेदना के अन्तर्गत आते हैं।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एक अत्यन्त विचारशील, संवेदनशील एवं मध्यवर्गीय चेतना के जागरुक कवि हैं। भारतवर्ष में कायस्थ जाति हमेशा कलम की धनी रही है। इन लोगों में कृषि आदि से कहीं अधिक लगाव कोर्ट कचहरियों में रहा है। इसी समय सर्वेश्वर जी का जन्म हुआ जिन्होंने बड़े होकर अपने काव्य के द्वारा समाज में फैली विषमताओं को दूर किया है। सर्वेश्वर जी की अधिकांश कविताओं में मध्यवर्गीय असंगतियों एवं तत्सम्बन्धित व्यंग्य को स्थान दिया गया है। इसी तरह सर्वेश्वर दयाल जी ने नगरों में बसने, गाँवों को उजड़ने को महसूस करते हुए नगर–संस्कृति एवं ग्राम्य–संस्कृति के अन्तर को समझते हैं।

मुख्य शब्द : व्यक्तित्व, विचारधारा एवं रचना दृष्टि

प्रस्तावना

''नयी कविता के विकास में 'सर्वेश्वर' का सृजन अलग पहचान लिये हुआ हैं। नये कवियों में वे एक ऐसे कवि हैं, जिनसे नयी कविता को शक्ति अर्थमयता और गति प्राप्त हुई है। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना एक अत्यन्त विचारशील, संवेदनशील एवं मध्यवर्गीय चेतना के जागरुक कवि हैं उनका काव्य केवल भावों का महत् उच्छलन नहीं वरन् बौद्धिकता की परिणिति भी है।''[1]

भारतवर्ष में कायस्थ जाति सदैव से कलम की धनी रही है, इन लोगों में कृषि आदि से कहीं अधिक लगाव कोर्ट कचहरियों से रहा है। सर्वेश्वर के पिता विश्वेश्वर दयाल जी विचारों के बहुत पक्के थे। जीविका के लिये उन्होंने वैदिक पुस्तकालय की दुकान खोली, जो कुछ दिनों बाद वह फोटो फ्रेमिंग में बदल गयी। इस प्रकार वे अपना पेशा बदलते रहे। उस समय देश में स्वतंत्रता की लहर जोरों पर थी। विश्वेश्वर दयाल जी भी उस विचार से काफी प्रभावित हुये। उनकी इस विचारधारा का प्रभाव तब बिल्कुल स्पष्ट हो गया जब उन्होंने अपना विवाह आर्य समाजी ढंग से किया। विश्वेश्वर जी की पत्नी विमला कन्या विद्यालय, जालंधर की पढ़ी थी। अतः उन्हें यहाँ गर्ल्स हाईस्कूल में अध्यापन कार्य मिल गया।यहीं पर हमारे आलोच्य कवि श्री सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म 15 सितम्बर सन् 1927 पश्चिमी उत्तर प्रदेश बस्ती में हुआ था। सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का आरम्भिक जीवन कस्बेनुमा छोटे से छोटे शहर के बाहर, चारों तरफ दूर–दूर तक फैले खेतों और छोटे–छोटे गाँवों के बीच बीता, जिसमें–

''खेतों की मेड़ों, घर के पास अनाथ आश्रम के बच्चों के अलावा आर्थिक संघर्ष से उत्पन्न पारिवारिक कलह भी बचपन के साथी रहे।''[2] सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की आरिम्भक शिक्षा–दीक्षा बस्ती में ही हुई। सर्वेश्वर की माता भी अस्वस्थ और आर्थिक संकटों से लड़ती अन्त तक अध्यापन का कार्य करती रहीं। सर्वेश्वर की माता का तबादला बनारस हो गया, सर्वेश्वर भी अध्ययन के लिये अपनी माता के पास बनारस पहुँच गये। सन् 1943 में उन्होंने क्वीन्स कालेज बनारस से इण्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की,1944–45 में आर्थिक विपन्नता और बहन की शादी के लिये पैसा इकट्ठा करने की नीयत से पढ़ाई छोड़ दी । उनके हृदय की उत्कट अभिलाषा आगे बढ़कर कुछ कर गुजरने की थी, फलतः वे बस्ती से इलाहाबाद पहुंच गये। वहीं से उन्होंने पहले बी. ए. और फिर सन् 1949 में एम. ए. परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1949 का वर्ष कवि के जीवन के लिये जितना आनन्ददायक था उतना ही मर्मान्तक पीड़ा पहुँचाने वाला भी था।यहीं उन्होंने ताराशंकर नासाद के साथ, 'परिमल' की स्थापना की। तभी ए0 जी0 ऑफिस इलाहाबाद सेक्रेटरी के द्वारा (जो साहित्यिक अभिरुचि के थे) तार देकर

सर्वेश्वर को बुलाया गया। सन् 1960 के बाद वे दिल्ली से लखनऊ रेडियो स्टेशन पर आ गये। सन् 1964 में जब 'दिनमान' पत्रिका निकली तो अज्ञेय के आग्रह पर अपने पद से इस्तीफा देकर वे पुनः दिल्ली आ गये और वात्स्ययन (अज्ञेय) के साथ 'दिनमान' में कार्य करने लगे। कुछ दिन सहायक सम्पादक रहे और बाद में वे उसके उप–प्रमुख सम्पादक हो गये। नवम्बर 1972 से उन्होंने 'पराग' के सम्पादक पद का कार्यभार सम्हाला।

23 सितम्बर सन् 1983 को दिल्ली में आकस्मिक उनका निधन हुआ जो कि हिन्दी साहित्य की अपूर्णीय क्षति थी। सर्वेश्वर जी लम्बे कद के खुले रंग के आकर्षक व्यक्तित्व के धनी थे ''उनका स्वभाव न अच्छा न बुरा, बाहर से गंभीर सौम्य पर भीतर वैसा नहीं, विपत्ति, संघर्ष, निराशाओं से घनिष्ठ परिचय के कारण जरूरत पड़ने पर खरी बात कहने में सबसे आगे। अपनों के बीच बेगानों–सा रहने की और बेगानों को अपना समझने की मुख्य आदत। काहिली, सुस्ती, सोचना अधिक करना कम, अपनी लीक पर चलना और किसी की परवाह न करना, ये कुछ दोष है – दूसरों की दृष्टि में।''[3]

''किन्तु आकांक्षा कुछ ऐसा करने कि जिससे यह दुनियाँ बदल सके, पूँजी मन का असन्तोष और मित्रों का सहयोग।''[4]

सर्वेश्वर स्वयं अपना परिचय इन शब्दों में देते हैं–

''मैं उस आदमी के साथ उसकी यातना में खड़ा हूँ, संवेदना के स्तर पर मैं ही वह आदमी हूँ..................। मैं किसी राजनैतिक दल का सदस्य नहीं हूँ क्योंकि कोई भी राजनैतिक दल आम आदमी के साथ नहीं है।''5

आगे वे फिर लिखते हैं – '' मैं साधारण हूँ और साधारण ही रहना चाहता हूँ, आतंक बनकर छाना नहीं चाहता।''[6]

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अपनी प्रथम कविता संग्रह 'काठ की घंटियाँ' में काठ की घंटियाँ बजकर एक अनाकर्षक और बेसुरी ध्वनि निष्पन्न करके न तो किसी को कोई चेतावनी ही दे पाती हैं और न किसी को अपनी ओर आकर्षित कर सकती हैं। ठीक उसी प्रकार आज हमारी (मध्यवर्गीय) चेतना कुण्ठित होकर जड़वत हो चली है। वह बहुत कुछ सोच कर और चाहकर भी अपनी अभिव्यक्ति नहीं दे पाती है। इस विषय में अज्ञेय ने लिखा है – ''सर्वेश्वर जी को जो दिखता है, उसके पीछे जो है, उससे व्यस्त हैं और उसे उभार अथवा उघाड़कर सामने लाना चाहते हैं।''7 सर्वेश्वर जी की अधिकांश कविताओं में मध्यवर्गीय असंगतियों और तत्सम्बन्धित व्यंग्य को स्थान दिया गया है –

'' हर ओर खुलने लगे नये–नये परदे और एक नयी दुनियाँ फिर मेरे चारों तरफ खड़ी हो गयी जो मेरी दिन भर मनहूस दुनियाँ से बड़ी हो गयी।''[8]

यही नहीं ''आज निम्न वर्ग तथा उच्च वर्ग के बीच मध्यवर्ग की स्थिति इतनी दयनीय हो गयी है कि उसका जीवन जीना दूभर हो गया है। पर इन क्लेशद और मर्मविदारक स्थितियों का भी प्रदर्शन हो वह भी आकर्षक ढंग से। कैसी बिडम्वना है, कि .... आज की दुनियाँ में आंसू भी शोख चेहरों के पसंद किये जाते हैं और विवशता, भूख व मृत्यु में भी आकर्षण आ जाता है यदि इनको सजा दिया जाये।''[9]

अपनी मध्यवर्गीय विशेषताओं के कारण ही सम्भवतः सर्वेश्वर नये कवि होकर भी अन्य कवियों से अलग दिखाई पड़ते हैं। डॉ0 हरिचरण शर्मा जी ने लिखा है – ''जिन विषयों पर ये कवितायें लिखी गयी हैं वे विषय भले ही पुराने हों उनके प्रति कवि की 'सोच' नई है। विषय तो बहुत मुश्किल से बदला करते हैं। हाँ उनके प्रति दृष्टि बदल जाती है या यों कहें कि वस्तु बदल जाती है।''[10]

'अपनी बिटिया के लिये,' 'बसंत की एक शाम', 'आये महन्त बसन्त' तथा 'मेघ आये' शीर्षक कवितायें भी प्रकृति से सम्बन्धित हैं तथा इनमें मानवीयता तथा सार्वजनीनता को सांकेतिक अभिव्यक्ति मिली है। सूरज, हेमन्त, संध्या तथा बसंत आदि कवितायें भी इस आधुनिक बोध में किसी से पीछे नहीं है। सूर्योदय तथा सूर्यास्त का एकचित्र इस तथ्य के स्पष्टीकरण के लिये पर्याप्त होगा –

'' जब वह इन खपच्चियों को दबाता है
सूरज चोटी पर उचक जाता है
करतब दिखाता है
फिर उलटकर छिप जाता है।''[11]

सर्वेश्वर जी ने आरम्भ से ही अपनी कविताओं में प्रकृति को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया। उन्होंने प्रकृति के विभिन्न रूप लोकगीत में प्रेमिका में मृत्यु में, नारी में, प्रेम सौन्दर्य आदि में अभिव्यक्ति किया है। सर्वेश्वर ने प्रकृति के व्यापक और विशाल दृश्यों को अपनी कविताओं में उतारा है –

''आकाश की नीली टोपी लगाये/क्षितिज का टीला
चारवाहे सा/ढलते सूरज की आग ताप रहा है।''[12]

किसी लेखक की रचना प्रक्रिया जानना या उसका विश्लेषण करना अत्यन्त कठिन कार्य है। सृजन की अवस्था किसी समाधि की अवस्था से कम नहीं होती। ऐसी अवस्था को अनायास ही नहीं जाना जा सकता है –

''लेखक के मन में किस प्रकार बीज वपन होता है, किस तरह उसमें कल्ले फूटते हैं, किस प्रकार वही कल्ले एक बड़े पेड़ की शक्ल अख्त्यार कर लेते हैं – एक पेड़ जिसमें पत्ते, फूल, फल क्रमशः पल्लवित होते हैं। साहित्य की तुलना एक वृक्ष से की जा सकती है, पर वृक्ष के पल्लवित पुष्प होने में जो बीज कार्य करता है, वह बीज उसका 'उत्स' होता है, बीज प्रकृति की देन, सृष्टि का अनूठा चमत्कार, परन्तु लेखक के मन में जो बीज–वपन होता है उसका 'उत्स' उसकी व्यक्तिगत प्रतिभा के अतिरिक्त उसका सामाजिक परिवेश भी होता है। प्रतिभा तो कारयित्री शक्ति है, जो नैसर्गिक रूप से एक साहित्य सृजनकर्ता के भीतर निहित रहती है, इस निहित शक्ति को आधार मिलता है समाज से।''[13]

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना को 'तीसरा सप्तक' का सर्वश्रेष्ठ कवि नहीं करार दिया जा सकता है, पर यह तो निसंकोच स्वीकार किया जा सकता है कि भाव स्तर सम्पूर्ण आधुनिक बोध को सर्वेश्वर जी सफलतम अभिव्यक्ति दे सके हैं, इनका शस्त्र व्यंग्य और लक्ष्य है समाज तथा राजनीति। सर्वेश्वर जी सम–सामयिक जीवन के समस्त पक्षों के अभाव को ही अपना मुख्य विषय बनाते

हैं। कवि के वक्तव्य तथा रचना में पर्याप्त अन्तर की स्थित वे स्वीकार करते हैं क्योंकि 'कविता अपना वक्तव्य स्वयं देती है।' कहा गया है सर्वेश्वर की अनुभूतियों में लावा फूटता है। उनकी परवर्ती रचनाओं में यह लावा अधिक प्रभावशाली ढंग से फूटा है। डॉ0 कान्ति कुमार ने लिखा है –

''वास्तव में सर्वेश्वर की रचनाओं में निरन्तर लोक सम्पृक्ति का गहन भाव मिलता है।''[14]

उन्होंने काव्य रचना का रास्ता क्यों चुना इस सम्बन्ध में वे स्वयं बताते हैं –

मैं कविता क्यों लिखता हूँ – मैंने कविता क्यों लिखी? कहूँ कि किसी लाचारी से ही लिखी। आज की परिस्थिति में कविता लिखने से अधिक सुखकर और प्रीतिकर कई काम हो सकते हैं और मैं कविता न लिखता यदि –

''हिन्दी के आज के प्रतिष्ठित कवियों में एक भी ऐसा होता जिसकी कविताओं में कवि का एक व्यापक जीवन–दर्शन मिलता।''[15]

''हिन्दी के गण–मान्य आलोचकों में भी एक भी आलोचक ऐसा होता जिसने प्रयोगवादी या नयी कविता के बारे में एक भी समझदारी की बात कही होती।''[16]

''हिन्दी का एक भी जागरुक पाठक ऐसा होता जिसने हिन्दी की वर्तमान विभूतियों को नयी लिखी जाने वाली रचनाओं पर घोर असन्तोष न प्रकट किया होता।''[17]

समाज में व्याप्त छल–छंद, अनीति, भ्रष्टाचार, शोषण की नीति उनके कवि को जाग्रत करने वाले उन्हें लिखने के लिये उत्तेजना देने वाले बने–

''वर्तमान मठाधीश कवि अपनी औकात घटने के डर से नये प्रयोगों के खिलाफ उछल–उछलकर चिल्लाते नहीं, उन्हें गलत कहने के लिये दलबन्दी नहीं करते, रिश्वत नहीं देते, बल्कि सद्भाव से उन्हें अपनाते, अपनी प्रतिभा का (यदि वह है तो) उपयोग रचनात्मक कार्य के लिये करते, बदलते हुये युग और मूल्यों को अपनाने के लिये अपने सीने चौड़े करते और अपनी दृष्टि प्रखर करते।''[18]

उनका विश्वास था कि – ''कवि के वक्तव्य और कविता के वक्तव्य में अन्तर होता है। कविता अपना वक्तव्य स्वयं देती है, कवि की वकालत उसके लिये जरूरी नहीं है क्योंकि आगे भी यदि उसे रहना है तो अपना वक्तव्य स्वयं देना होगा कवि सदैव साथ नहीं रहेगा। ऐसी कविता जो रक्षणीय हो, उसका न रहना ही अच्छा है।''[19] उन्होंने स्पष्ट स्वीकार किया कि वे शौकिया कवि नहीं बने थे। उनके अनुसार –''हवा को मुट्ठी में बन्द नहीं किया जा सकता, उसकी छुअन महसूस की जा सकती है और उससे हवा की गति, स्थिति व दिशा को पहचाना जा सकता है। कविता भी इसी नियम की चोट सहती है। वह कवि की स्थिति, मनोस्थिति, गति और दिशा का ज्ञान करा सकती है बशर्ते वह कविता हो, चार–छह, उल्टी–सीधी, छोटी–बड़ी और तरतीव – बेतरतीव पंक्तियां भर न हो।''[20] सर्वेश्वर ने युद्ध, राजनीति, लोकतंत्र, संसद व्यवस्था, गरीबी व बेरोजगारी सभी को अपनी कविता का विषय बनाया है।'कुआनो नदी' और 'जंगल का दर्द' की कविताओं में तो यह आत्मीयता समय की सच्चाइयों से जुड़कर और भी अधिक प्रभावी रूप लेकर आई है। इन संग्रहों में सर्वेश्वर का कवि भावात्मक संवेगों की जकड़ से निकलकर विचार संघर्ष और तर्क की ओर तेजी से कदम बढ़ाने लगता है।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना अपनी विचारधारा में मनुष्य की जिजीविषा को इन्हीं संघर्षों की भूमिका पर निर्मित करते हैं। ऐसी स्थिति में यदि वह कह रहे हैं कि –''रात पर मैं जी रहा हूँ निडर/जैसे कमल, जैसे पंथ, जैसे सूर्य। क्योंकि कल भी हम खिलेंगे।''[21] सामाजिक जीवन की विकृतियों, मजबूरियों और असमर्थताओं के स्पष्ट और खुले चित्र सर्वेश्वर की कविता में आये हैं। मध्यमवर्गीय जिन्दगी का प्रमाणिक दस्तावेज बनी यह कविता सही अर्थों में अपने समय का सार्थक लेख है। मध्यम वर्ग और उसमें भी निम्न मध्यवर्ग–क्लर्क या कम वेतन पाने वाले पर ही उनकी दृष्टि अधिक गई है। ठीक ही है यह तो वह वर्ग है जो सर्वाधिक त्रस्त और संतप्त है। सुबह से शाम तक कारखानों, दफ्तरों और विद्यालयों में काम करने वाला व्यक्ति जब शाम को घर लौटता है तो विदेह होता है। सर्वेश्वर दयाल द्वारा रचित कविता 'कैसी विचित्र है यह जिन्दगी' में इसी मध्यवर्गीय जिन्दगी के मुंहबोलते चित्र हैं। एक उदाहरण देखिये –

'' भर दो
इस त्व्चा की, मृतात्मा की सूखी ठाठर में
यह घास–पात, कूड़ा कबाड़ सब कुछ भर दो
लगा दो इन नकली कोड़ियों की आँखें
कानों में सीपियाँ
पैरों में खपच्चियाँ
मेरी इस ह्दयहीन, धमनीहीन स्नायुहीन काया में
सभी कुछ भर दो
ताकि मैं इस स्निग्ध, पयमती माता के निकट
अपनी चेतनाहीन पूँछ को एक स्थिति में उठा
उसके वात्सल्य को ह्दय को, आकर्षण को, चेतना को
सबको उभार दूँ
और तुम इस मुर्दे के उपजाये स्नेह को निचोड़कर
जीवित रहो
जिन्दा रहो।''[22]

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना आज की इस बाह्याडम्बर वाली व्यवस्था को आमूल परिवर्तन कर डालना चाहते हैं। यह परिवर्तन केवल बाह्य रूप से ही सम्भव नहीं वरन् उसकी आन्तरिक व्यवस्था के बदलाव से भी है। उनके अनुसार तभी विश्व में एक युगान्तकारी परिवर्तन हो सकेगा, दुनियाँ बदली हुई होगी, सभी को समान अवसर प्राप्त होंगे। परन्तु यह सब तभी सम्भव है, जब विश्व में शांति बनी रहे। उन्होंने शान्ति की ओट में युद्ध की तैयारी करने वालों पर तीखा प्रहार करते हुये कहा है –

''क्या कमाल है मेरे दोस्त/काश कि तुम इन साँपों के शरीर को/तितलियों के परों से और मढ़ दिया होता। फिर तुम्हारी यह शान्ति/असली शान्ति लगने लगती। क्या फौजी वर्दियों पर/बौद्ध भिक्षुओं का गैरिक बसन नहीं ओढ़ा जा सकता था।''[23]

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना क्लेश और बिडम्बनापूर्ण स्थितियों का उद्घाटन 'कलाकार और सिपाही' शीर्षक कविता से करते हुये कहते हैं कि आज का सिपाही–

''दूसरों की आज्ञा पर/चन्द पैसों के वास्ते/
शिलायें चट्टानें
पर्वत काट–काट कर/रसद हथियार, एम्बुलेंस, मुर्दा–
गाड़ियों के लिये/सड़कें बनाते हैं/वे तो पागल थे
पर इनको मैं क्या कहूँ?''[24]

सर्वेश्वर दयाल इसी तरह नगरों के बसने, गांवों के उजड़ने को महसूस करते हुये नगर–संस्कृति और ग्राम्य–संस्कृति के अन्तर को भी समझते हैं। 'यहीं कहीं कच्ची सड़क थी' और कई एक कवितायें इसका प्रमाण हैं। इसके अतिरिक्त सर्वेश्वर ने युद्ध, राजनीति, लोकतंत्र, संसद व्यवस्थाऔर गरीबी व बेरोजगारी सभी को अपनी कविता का विषय बनाया है।'कुआनो नदी' संग्रह की 'गरीबी हटाओ' कविता और इससे पहले संग्रह में आई 'लोहिया के न रहने पर' कविता इसका प्रमाण है। दो उदाहरण देखिये –

''गरीबी हटाओ सुनते ही
वे कब्रिस्तानों की ओर लपके
और मुर्दों पर पड़ी चादरें उतारने लगे
जो गंदी और पुरानी थीं
फिर वे नयी चादरें लेने चले गये
जब लौटकर आये तो मुर्दों की जगह
गिद्ध बैठे थे।''[25]
''इस गरीब धरती के
निहत्थे आदमियों की ओर से
कह दो,
जब सारे अस्त्र जबाब दे जायें
तब उस पत्थर से
वे इन्सानियत का सिर फोड़ें
जिसे वे चाँद से लायें।''[26]

अध्ययन के उद्देश्य

मैं स्पष्ट करना चाहती हूँ कि जिस प्रकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना जी ने मध्यम वर्गीय संवेदना को समाज के सामने उजागर करने का कार्य किया है जिससे समाज में संवेदना का भाव उत्पन्न हो सके जो आज समाज से समाप्त होता जा रहा है। सर्वेश्वर ने कविताओं में आत्मीय समता की सच्चाई से जुड़कर और भी अधिक प्रभावी बनाया है। सर्वेश्वर दयाल जी समाज में व्याप्त वाह्याडम्बर वाली व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करना चाहते थे।

निष्कर्ष

वस्तुतः सर्वेश्वर दयाल सक्सेना ने अपने आस–पास जिस परिवेश को देखा और उसे अपनी विचारधारा में लाकर अपनी कविताओं के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इससे पता चलता है कि सर्वेश्वर दयाल सक्सेना की जो विचारधारा है वह सामाजिक, राजनीतिक, ग्रामीण एवं गरीबी से प्रेरित है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ0 मंजू त्रिपाठी – सर्वेश्वर दयाल शर्मा और उनका काव्य संसार पृष्ठ 2*
2. *अज्ञेय – तीसरा सप्तक पृष्ठ 206*
3. *वही, पृष्ठ 206*
4. *वही, पृष्ठ 206*
5. *सर्वेश्वर दयाल सक्सेना द्वारा एक हस्तलिखित निबन्ध पृष्ठ 1*
6. *वही, पृष्ठ 2*
7. *सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – काठ की घंटियाँ पृष्ठ 8*
8. *डॉ0 मंजू त्रिपाठी – सर्वेश्वर दयाल शर्मा और उनका काव्य संसार पृष्ठ 41*
9. *डॉ0 हरिचरण शर्मा –नई कविता नये धरातल पृष्ठ 171*
10. *डॉ0 मंजू त्रिपाठी – सर्वेश्वर दयाल शर्मा और उनका काव्य संसार पृष्ठ 45*
11. *सर्वेश्वर दयाल सक्सेना– बाँस का पुल पृष्ठ 29*
12. *वही, पृष्ठ 33*
13. *डॉ0 शशिप्रभा शास्त्री – साहित्य समाज शास्त्रीय सन्दर्भ, पृष्ठ 16*
14. *डॉ0 मंजू त्रिपाठी – सर्वेश्वर दयाल शर्मा और उनका काव्य संसार पृष्ठ 19*
15. *अज्ञेय – तीसरा सप्तक, पृष्ठ 208*
16. *वही , पृष्ठ 208*
17. *वही , पृष्ठ 208*
18. *वही , पृष्ठ 209*
19. *वही , पृष्ठ 211*
20. *डॉ0 हरिचरण शर्मा – सर्वेश्वर का काव्य संवेदना और सम्प्रेषण, पृष्ठ 20*
21. *धर्मवीर भारती – सात गीत वर्ष , पृष्ठ 78*
22. *लक्ष्मीकांत वर्मा – नयी कविता अंक 3, पृष्ठ 91*
23. *डॉ0 मंजू त्रिपाठी – सर्वेश्वर दयाल शर्मा और उनका काव्य संसार, पृष्ठ 30*
24. *सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – काठ की घंटियाँ,पृष्ठ 372*
25. *डॉ0 हरिचरण शर्मा –सर्वेश्वर का काव्य संवेदना और सम्प्रेषण , पृष्ठ 26*
26. *वही , पृष्ठ 26*